Vol 6 Issue 2 August 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | August - 2016

GRT Golden Research Thoughts

अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का एक तुलनात्मक अध्ययनः टिहरी गढ़वाल के सन्दर्भ में।

डॉ. भरत सिंह असवाल[1] , प्रो. ऊषा धूलिया[2]

[1]अतिथि प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, हे.न.ब.ग. विश्वविद्यालय,(केन्द्रीय वि.वि.) परिसर बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल।

[2]संकायाध्यक्ष–स्कूल ऑफ एजूकेशन, विभागाध्यक्ष–संयोजक– शिक्षा विभाग, हे.न.ब.ग. विश्वविद्यालय,(केन्द्रीय वि.वि.) परिसर बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल।

शोध सार

आधुनिक बनने की होड़ में शामिल युवा पीढ़ी पश्चिमी मूल्यों से प्रभावित होती जा रही है। आज के समय में आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने की चेष्टा करने की बहुत आवश्यकता है। हमें यह शंका नहीं करनी चाहिए कि रोजगार परक व्यवस्था में मूल्य कोई महत्व नहीं रखते या फिर मूल्यवान होना हमें आधुनिक ढ़ग से जीने व विकसित होने में बाधक है। इसलिए यह कहा जा सकता है, कि मूल्यवान अध्यापक के अभाव में समाज को मूल्यवान बनाना या देखना एक कल्पना सार है, मूल्यों का औचित्य अध्यापक के सन्दर्भ में। उतना ही बढ़ जाता है जितना कि विद्याथियों व समाज के अन्य व्यक्तियों के सन्दर्भ में। प्रस्तुत शोधकार्य में टिहरी जनपद (उत्तराखण्ड) के माध्यमिक सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों में व्याप्त मूल्यों की स्थिति का पता लगाने का प्रयास किया गया है। शोधकार्य 164 शिक्षकों के न्यादर्श पर सम्पन किया गया। जिसमें उनकों आयुवर्ग, कनिष्ठता/वरिष्ठता तथा ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के आधार पर उप न्यादर्शो में व्यवस्थित किया गया है। अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक मूल्यो को ज्ञात करने के लिए डॉ0 एस0पी0 आहलुवालिया (1980) द्वारा प्रमापीकृत ''टीचर्स वैल्यूज इन्वैन्ट्री'' का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में विभिन्न आयुवर्ग के अध्यापकों के मूल्यों में मध्यमान के आधार पर अन्तर ज्ञात किया गया, केवल 20 से 29 तथा 30 से 39 एवं 40 से 49 आयुवर्ग के अध्यापकों में सौन्दर्यात्मक मूल्यों की समान स्थिति में अन्तर पाया गया। सैद्धान्तिक, आर्थिक, तथा सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों में तथा आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों में अन्तर विद्यमान है।

प्रस्तावना :

आधुनिक बनने की होड़ में शामिल युवा पीढ़ी पश्चिमी मूल्यों से प्रभावित होती जा रही है। आज के समय में आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने की चेष्टा करने की बहुत आवश्यकता है। हमें यह शंका नहीं करनी चाहिए कि रोजगार परक व्यवस्था में मूल्य कोई महत्व नहीं रखते या फिर मूल्यवान होना हमें आधुनिक ढ़ग से जीने व विकसित होने में बाधक है। इसलिए यह कहा जा सकता है, कि मूल्यवान अध्यापक के अभाव में समाज को मूल्यवान बनाना या देखना एक कल्पना सार है, मूल्यों का औचित्य अध्यापक के सन्दर्भ में। उतना ही बढ़ जाता है जितना कि विद्याथियों व समाज के अन्य व्यक्तियों के सन्दर्भ में। अतः अध्यापक ही बालक के जीवन का निर्माता है वहीं उसके मस्तिष्क का प्रशिक्षण कर उसे योग्य बना सकता है। डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार, ***''अध्यापक पीढ़ी दर पीढ़ी वैदिक परम्पराओं का हस्तान्तरण करता है प्राविधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है। वह केवल व्यक्ति को ही रास्ता ही नहीं दिखाता अपितु सारे राष्ट्र को दिशा बोध देता है।''*** आज जीवन का कोई भी क्षेत्र चाहे धार्मिक, सामाजिक, भौतिक, आध्यात्मिक,राजनैतिक तथा आध्यात्मिक हो हर तरफ मूल्यों में निरन्तर

गिरावट आ रही है। यदि आज के मूल्य विहीन समाज में अध्यापक मे मूल्यों का विकास नहीं होगा, तो वह समाज व राष्ट्र के लिये अच्छे नागरिकों का निर्माण किस प्रकार कर पायेगा। मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी समाज एव राष्ट्र को किसी भी प्रकार की बुराई, हिंसा, भ्रष्टाचार तथा उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है। जीवन के उपरोक्त मूल्यों के सम्बर्द्धन से ही व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास हो सकता है और समाज के लिये कुशल व उपयोगी बन सकता है। प्रश्न उठता है कि शिक्षा के माध्यम से किस तरह विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया जाय कि वे समाज में सहयोगिता, सहकारिता, सहजीवन तथा सद्भावना के पक्षधर बन सकें। आज इन जीवन मूल्यों का वरण करके ही मनुष्य तनाव अपराधों व बुराईयों से बच सकता है लेकिन, उसके लिये पहले अध्यापकों को मूल्यों को आत्मसात करना होगा। अध्यापकों को अपने वैयक्तिक व व्यावसायिक क्षेत्रों में समाहित मूल्यों को अपना होगा। लेकिन आज अध्यापकों में मूल्यों की क्या स्थिति है इसका पता लगाना होगा विभिन्न प्रकार की विद्यालयी प्रशासनिक व्यवस्थाऐं भी उनके मूल्यों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डालती है। अतएव अध्यापकों में निहित मूल्यों के स्वरूपों का पता लगाना होगा।

पुनरावलोकन हेतु कतिपय शोध अध्ययन सन्दर्भित किये गये है, उनमें कुछ मूल्यों का जो अध्यापक अपने व्यवसाय से संतुष्ट थे, उनमें सैद्धान्तिक

मूल्य की प्रधानता थी, जबकि अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट अध्यापकों में आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य अधिक पाये गये। मूल्यों में अन्तर के अध्ययन का प्रयास शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है, और कुछ शोधों में इन आयामों पर विभिन्नता पायी गयी है। किन्तु उत्तराखण्ड के टिहरी जनपद के सन्दर्भ में ऐसा अध्ययन प्राप्त नहीं हो सका है। जिसमें माध्यमिक स्तर पर अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रशासनिक स्तर पर संचालित माध्यमिक स्तर के इन विद्यालयों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में विविधता से इंकार नहीं किया जा सकता है। अतः इन विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों में निहित मूल्यों के सन्दर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का प्रयास किया गया है।

उत्तराखण्ड को देवभूमि की संज्ञा की गयी है। इस दृष्टि से यहॉ रहने वाले व्यक्तियों के जीवन में मूल्यों एवं आदर्शों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मूल्यों एवं आदर्श ये दोनों ही चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आत्मसात किये हुए मूल्य ही जीवन के आदर्श बनते है। देश के अन्य राज्यों की तरह उत्तराखण्ड राज्य में रहने वाले व्यक्तियों को अधिकाशतः शिक्षा माध्यमिक स्तर तक ही हो पाती है। तदैव माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापको की यह महति भूमिका हो जाती है कि वे अपने विद्यार्थियों में वांछित मूल्यों का समूचित विकास करें। शोधार्थी ने विचार किया कि पहले वह माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों में व्याप्त मूल्यों को जानने का प्रयास करें ताकि यह पता लगाया जा सकें कि अध्यापक में स्वयं कौन–कौन से मूल्य विद्यामान है, और व स्वयं किन–किन मूल्यों को विकसित करने में सहायता कर सकेते है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल जनपद के आशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों के स्तर की वस्तुस्थिति को जानने हेतु सम्पादिक किया गया।

पूर्वगामी शोध कार्य की समीक्षा :–

वर्मा (1972) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापको व छात्रों में अन्तर–पारस्परिक सम्बन्धों में मूल्यों का अध्ययन किया और निष्कर्ष पाया कि (अ) अध्यापक व छात्रों के मूल्यों मे काफी भिन्नता पायी गयी। (ब) अध्यापकों ने पारिवारिक प्रतिष्ठा धार्मिक तथा सौन्दत्मक मूल्यों को अधिक महत्व दिया (स) छात्रों ने सामाजिक धार्मिक तथा ज्ञानात्मक मूल्यों को अधिक महत्व दिया। सिंह (1974) ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि जो अध्यापक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट थे। उनमें सैद्वान्तिक मूल्य की प्रधानाता थी जबकि अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट शिक्षकों में आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य अधिक पाये गये। प्रभावती ;1987द्ध ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकां के व्यक्तित्व आवश्यकता, नैतिकता एवं निर्णय क्षमता के सन्दर्भ में अध्ययन का निष्कर्ष पाया कि (अ) पुरूष अध्यापकों ने महिला अध्यापिकाओं की तुलना में सौन्दर्यात्मक, सौद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया। (ब) शहरी क्षेत्र के पुरूष अध्यापकों ने ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष अध्यापकों की तुलना में सौन्दर्यात्मक सैद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्यों को अत्याधिक बल दिया। (स) शहरी महिला अध्यापकों ने आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों पर तथा ग्रामीण महिला अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्यों पर अत्याधिक बल दिया। भ्रामरी एवं भागवती (1988) ने प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के मूल्यों पर आधुनिकता का प्रभाव का अध्ययन किया। डॉ0 एस0 पी0 अहलुवालिया के द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग किया तथा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये– (अ) प्राइमरी विद्यालयों के अध्यापकों में आधुनिकता के आधार पर आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्य अन्य अध्यापकों की अपेक्षा कम पाये गये। (ब) ज्यादा आधुनिक तथा औसत आधुनिक अध्यापकों में सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्य समान पाये गये। पटेल तथा सिंह (2012) ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि, मूल्य एवं समायोजन स्तर का अध्ययन सम्पन्न किया इन्होंने डॉ0 शैरी व वर्मा की व्यक्तिगत मूल्य सूची डॉमगल की अध्यापक समायोजन सूची व डॉ0 सिंह तथा शर्मा की सेवा सन्तुष्टि मापनी का प्रयोग किया। अपने शोध–अध्ययन में प्रमुख रूप से प्राप्त निष्कर्ष निम्न रहे– (अ) पुरूष शिक्षक महिला शिक्षकों की अपेक्षा उच्च धार्मिक व सुखवादी मूल्य रखते हैं। (ब) प्रजातान्त्रिक, आर्थिक, शक्ति व पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों पर पुरूष व महिला शिक्षकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। (स) सामान्य वर्ग के शिक्षक सार्थक रूप से आरक्षित वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा धार्मिक व पारिवारिक प्रतिष्ठा के मूल्य उच्च रखते हैं। (द) आरक्षित वर्ग के शिक्षक, सामान्य वर्ग की अपेक्षा सामाजिक, ज्ञानात्मक व स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य अधिक रखते हैं। सोनी (2013) ने स्नातक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यो का अध्ययन किया जिसमें उन्हें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए– (अ) शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी छात्रों के जीवन मूल्यों के विभिन्न आयामों में सौन्दर्यात्मक मूल्य के अतिरिक्त अन्तर नहीं पाया जाता है, उनमें लगभग समानता है।(ब) शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी छात्राओं के जीवन मूल्यों में समानता है, उनमें सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि सभी मूल्यों से सम्बन्धित t–मान t– तालिका के मान से कम है। शर्मा एवं अग्रवाल (2013) ने मानवीय मूल्य और अध्यापक शिक्षा का अध्ययन कर निष्कर्ष पाया कि बिना मूल्यों के शिक्षा व्यर्थ है। मूल्य–परक शिक्षा वर्तमान समाज में एक अनिवार्य आवश्यकता है।

उपरोक्त शोधकार्य का विवरण यह स्पष्ट करता है कि अध्यापकों के मूल्यों पर विभिन्न प्रकार के शोधकार्य किये जाते रहे हैं, और इस दृष्टि से अध्यापकों के मूल्यों पर अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। नवोदित उत्तराखण्ड राज्य में अधिकतर अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त विद्यालयों की संख्या बहुत कम है। परन्तु इन विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र दोनों स्थानों में छात्रों की संख्या अधिक पायी जाती है। यद्यपि सरकारी विद्यालयों में नियुक्त शिक्षकों की योग्यता एवं मानक अशासकीय विद्यालयों में नियुक्त शिक्षकों की तुलना में उच्च पाये जाते हैं। आये दिन निजी विद्यालयों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है, तथा सरकारी विद्यालय धीर धीरे बन्द होने की स्थिति में है। लोगों का ध्यान सरकारी विद्यालयों के प्रति आकर्षण कम हैं, तथा निजी विद्यालयों के प्रति अधिक है। इसलिए शोधार्थी को उत्तराखण्ड राज्य के माध्यमिक स्तर के अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों के मूल्यों को जानने विषयक कोई शोधकार्य उपलब्ध नहीं हो पाया। शोधार्थी स्वयं उत्तराखण्ड का निवासी है, तथा शोधार्थी ने यह अहसास किया कि उत्तराखण्ड के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों के मूल्यों पर भी शोधकार्य किया जाना आवश्यक है। इसी

उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधकार्य उत्तराखण्ड के अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों पर सम्पन्न किया हे।

अध्ययन के उद्देश्य :–

किसी भी अनुसंधान में शोध समस्या का सफल निदान करने हेतुयह आवश्यक है कि शोध कार्य को सही दिशा व सोच के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। किसी भी क्रिया को करने का एक लक्ष्य अथवा उद्देश्य होता है जो किसी कार्य का अन्तिम बिन्दु है जहॉ तक पहुँचने का सतत प्रयास किया जाता है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोधकार्य के निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित कर शोधकार्य सम्पादित किया गया है–

01 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का आयु वर्ग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
02 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का कनिष्ठता एवं वरिष्ठता के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
03 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन हेतु परिकल्पनाएँ

परिकल्पना अनुसंधान कार्य में तथ्यात्मक व आधारित ज्ञान को पाने का एक सशक्त औजार है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रस्तुत समस्या के समाधान हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

01 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में आयु वर्ग के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
02 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
03 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है।

समस्या का सीमांकन

यह शोध अध्ययन केवल टिहरी जनपद के सभी 09 विकास खण्डो में अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों तक ही, सीमित जिसमें 09 विकास खण्डो के माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओ को शामिल किया गया है। तथा कार्यरत अध्यापकों को आयुवर्ग, कनिष्ठ एवं वरिष्ठ एवं ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार विभक्त किया गया है।

शोध प्रक्रिया :–प्रस्तुत शोधकार्य उत्तराखण्ड के अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों में विद्यमान मूल्यों की वर्तमान स्थिति को जानने पर सम्पादित किया गया है। इसलिए शोधार्थी ने आदर्श मूलक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।
न्यादर्शन :–उत्तराखण्ड में 13 जनपद हैं, जिसमें एक टिहरी जनपद है। जहॉ विश्व का चौथा और एशिया का सबसे बड़ा बहुउद्देशीय जल विद्युत बांध है। एशिया में सर्वाधिक ऊॅचाई पर बने इस विशाल बांध को भागीरथी नदी के जल प्रवाह के संगम क्षेत्र में बनाया गया है। यह टिहरी नगर प्राचीन काल से अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की असीम पहचान रखता है। जिस कारण यहॉ पर शिक्षकों, विद्यार्थी, अभिभावकों में अपेक्षाकृत जागरूकता अधिक है। इस समय जनपद में लगभग 17 अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय है, शोधार्थी ने लॉटरी पद्धति का प्रयोग करके आकस्मिक न्यादर्शन तकनीकी से 12 विद्यालयों का चयन किया और इन विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों में से मात्र 164 अध्यापकों का न्यादर्श ही शोधार्थी को उपलब्ध हो पाया।

शोध उपकरण :– प्रस्तुत अध्ययन में एस0पी0 आहलुवालिया द्वारा विकसित ''टीचर्स वैल्यू इन्वैन्ट्री'' का प्रयोग किया गया जिसमें अध्यापकों के क्रमशः सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक छः मूल्यों का मापन किया गया है। क्रमशः 25 प्रश्न है, और प्रत्येक प्रश्न के छः विकल्प है। इस उपकरण की वैधता एवं विश्वसनीयता ज्ञात करके इस उपकरण को मानकीकृत बनाया गया।

उपकरण का प्रशासन एवं आँकड़ों का संग्रह :– शोधार्थी ने चयनित 12 विद्यालयों के कार्यरत अध्यापकों से सम्पर्क किया और उन्हें अपने शोधकार्य का उद्देश्य एवं महत्व बताया। तदुपरान्त अलग–अलग विद्यालयों में शोधार्थी ने जाकर जिन तिथियों में शिक्षक उपलब्ध थे उन पर अपने शोध उपकरण को प्रशासित किया। इस सम्बन्धित शोध प्रश्नावली को प्रशासित करने के बाद उत्तर पत्रक की प्रतियों को उन शिक्षकों से वापस लिया गया। T.V.I के मैनुअल के आधार पर उपकरण की प्रतियों पर प्राप्ताकों की गणना की और अपने शोध उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न सारणियों को निर्मित किया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक :– सारिणी आंकड़ों पर सांख्यिकी तकनीकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन तथा t.मान एवं f. मान की गणना की गयी। उसके बाद परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिकल्पना संख्या–01

''अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में आयु वर्ग के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

सारणी संख्या–01
अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का आयुवर्ग के सन्दर्भ में तुलनात्मक विवरण
(मध्यमान, मानक विचलन तथा f.मान के पदों में)

विभिन्न आयु वर्ग (वर्ष)	अध्यापकों की संख्या	विभिन्न मूल्यों का विवरण												f-मान
		सैद्धान्तिक मूल्य		आर्थिक मूल्य		सौन्दर्यात्मक मूल्य		सामाजिक मूल्य		राजनैतिक मूल्य		धार्मिक मूल्य		
		M_1	SD_1	M_1	SD_1	M_1	SD_1	M_1	SD_1	M_1	SD_1	M_1	SD_1	
20-29	41	76.86	13.63	96.2	15.10	101.33	13.31	60.85	14.31	100.84	18.03	83.77	14.84	0.300
30-39	79	71.72	2.7	93.36	16.86	97.28	14.48	67.79	14.46	85.63	15.48	88.8	16.86	0.301
40-49	21	75.45	12.69	91.17	15.2	96.40	14.69	67.97	15.50	93.08	13.90	89.74	14.69	2.80
50-59	23	84.92	13.94	91.9	90 .96	92.33	16.66	68.78	17.07	84.93	15.71	103.77	16.36	0.44
df=164		**df = 162**												

0.05 स्तर हेतु सार्थकता स्तर पर f.मान त्र3.36
0 01 स्तर हेतु सार्थकता स्तर पर f.मान त्र6.36

20–29 आयु वर्ग पर df =5, 38 के लिय 0.05 सार्थकता स्तर पर f.मान = 2.45
30–39 आयु वर्ग पर df = 5, 40 के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर f.मान = 2.45
40–49 आयु वर्ग पर df = 5, 31 के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर f.मान = 2.53
50–59 आयु वर्ग पर df = 5, 29 के लिय 0.05 सार्थकता स्तर पर f.मान = 2.54

उपरोक्त सारणी संख्या–01 अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि–विभिन्न आयुवर्ग के सन्दर्भ में अशासकीय सहायता प्राप्त अध्यापकों में निहित मूल्यों में व्याप्त पारस्परिक अन्तर का आंकलन f–मान के पदों में करने पर आयुवर्ग क्रमशः 20 से 29, 30 से 39, तथा 50 से 59 आयुवर्गो के सन्दर्भ में f–मान क्रमशः 0.300, 0.301, तथा 0.44 पाया गया, जो कि विभिन्न आयुवर्ग के सन्दर्भ में 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी के मानक मूल्य क्रमशः 20–29 आयुवर्ग में 2.45, 30–39 आयुवर्ग में 2.45, तथा 50–59 आयु वर्ग में 2.54 की तुलना में काफी कम है, यानि कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है लेकिन f–मान का आकलन जब 40 से 49 आयुवर्ग के अध्यापकों के संन्दर्भ में किया गया तो यह f–मान 2.80 पाया गया, जो की सारणी के मानक मूल्य 2.53 से कई अधिक है अर्थात् 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः शोधार्थी 95 प्रतिशत विश्वास स्तर तक यह कह सकता है कि तत् सम्बन्धी अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में आयुवर्ग के संन्दर्भ में 20–29 आयुवर्ग,30–39 आयुवर्ग, व 50–59 आयुवर्ग में सार्थक अन्तर है। जबकि 95 प्रतिशत विश्वास स्तर तक के 40 से 49 आयुवर्ग के अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

यह इस कारण हो सकता है कि सभी आयुवर्ग के अशासकीय सहायता प्राप्त अध्यापकों में सैद्धान्तिक व सामाजिक मूल्यों की स्थिति अन्य मूल्यों के सापेक्ष न्यूनतम है, जबकि अन्य मूल्य आयुक्रम के बढ़ने के साथ घटते बढ़ते रहते हैं यह आश्चर्यजनक है कि अध्यापकों में सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा व सामाजिक सरोकार कम होते जा रहे है, जबकि अध्यापक ही समाज में ज्ञान के प्रकाश को फैलाने वाला, सिद्धान्तों पर विश्वास करने वाला तथा सामाजिक नेतृत्व की बागड़ोर संभालने वाला माना जाता है।यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक आयुवर्ग के कार्यरत अध्यापकों के सभी छः मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् सामान्य रूप में सभी आयुवर्ग के अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में निहित सभी मूल्यों की स्थिति लगभग एक जैसी है और रहती है।

शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना संख्या–01 ''अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में आयुवर्ग के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है,'' सांख्यिकीय कसौटी पर विभिन्न आयु वर्गो 20–29, 30–39 तथा 50–59 के सन्दर्भ में अधिकाशतः सत्य सिद्ध हुई है अर्थात् स्वीकृत की जाती है और 40–49 आयु वर्ग के सन्दर्भ में अंशतः खण्डित हो जाती है अर्थात् निरस्त की जाती है।

सारणीसंख्या–01 के आधार पर विभिन्न मूल्यों पर विभिन्न आयुवर्ग के अध्यापकों में क्षैतिजिक स्थिति क्रम में जो परिणाम प्राप्त हुए हैं उनकी सम्पुष्टि निम्नवत् है दण्डारेख संख्या–01 से भी हो रही है–

दण्डारेखसंख्या–01

अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में निहित विभिन्नमूल्यों कीसापेक्ष पारस्परिक क्षैतिजिक स्थिति क्रम कादण्डरेखीय चित्रण

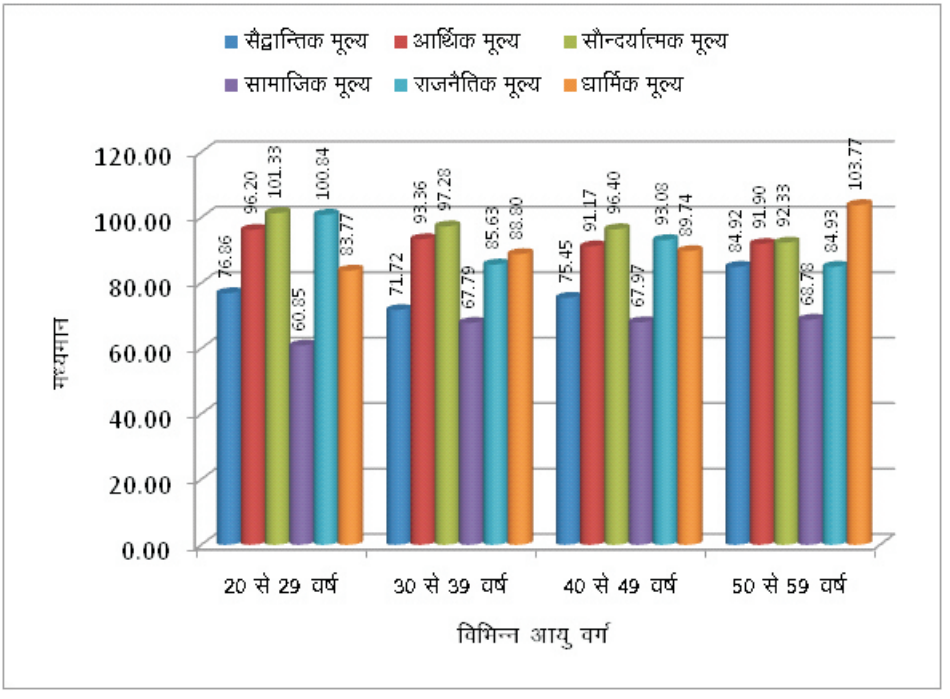

परिकल्पना संख्या–02

"अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी संख्या–02

अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक विवरण

(मध्यमान, मानक विचलन एव t–मान के पदों में)

क्रं0 सं0	विभिन्न मूल्य	कनिष्ठ अध्यापक (N=129)		वरिष्ठ अध्यापक (N=35)		M_1 ~M_2	t-मान	सार्थकता स्तर
		M_1	SD_1	M_2	SD_2			
1	सैद्धान्तिक मूल्य	71.25	13.48	78.78	14.01	7.53	2.68	0.01
2	आर्थिक मूल्य	92.25	18.71	101.07	10.71	8.82	3.18	0.01
3	सौन्दर्यात्मक मूल्य	97.12	15.04	98.5	16.93	1.38	0.41	N.S
4	सामाजिक मूल्य	67.25	15.96	81.64	15.79	14.39	4.22	0.01
5	राजनैतिक मूल्य	94.25	18.90	88.5	15.13	5.75	1.73	N.S
6	धार्मिक मूल्य	86.62	15.22	84.22	18.00	2.4	0.68	N.S

df =162 t–मान = 0.05सार्थकता स्तर पर=1.96
0.01सार्थकता स्तर पर=2.58

उपरोक्त सारणी संख्या–02 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि–अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत कनिष्ठ कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों मे विभिन्न मूल्यों में व्याप्त पारस्परिक अन्तर का आंकलन करने हेतु ज.मान की गणना की गयी जिसमें सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य तथा सामाजिक मूल्य का मान क्रमशः 2.68, 318, व 422 प्राप्त हुआ है जो कि ज.मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 2.58 से काफी अधिक है, अर्थात 0.01 स्तर पर सार्थक है जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य, राजनैतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्य का मान क्रमशः 0.41, 173 तथा 0.68 प्राप्त हुआ जो कि ज.मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 1.96 से बहुत कम है, यानि कि 0.05 स्तर पर सार्थक नही है।

अतः शोधार्थी 99 प्रतिशत विश्वास स्तर तक यह कह सकता है कि तत् सम्बन्धी अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों स्तर पर कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों के सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर विद्यमान है तथा अन्य मूल्य सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों पर 95 प्रतिशत विश्वास स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पुनश्चः उपरोक्त सारणी संख्या–02 में प्रस्तुत आंकड़ो द्वारा मध्यमान के आधार पर अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों में निहित विभिन्न मूल्यों की सापेक्ष क्रम स्थिति भी बताई जा रही है जो निम्नांकित सारणी संख्या–03 में सन्दर्भित आंकड़ो से स्पष्ट होता है।

सारणी संख्या–03
अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों में निहित विभिन्न मूल्यों की सापेक्ष स्थिति क्रम

अशासकीय सहायता प्राप्त अध्यापक	विभिन्न मूल्यों की स्थिति (मध्यमान के आधार पर)
कनिष्ठ अध्यापक	सौन्दर्यात्मक > राजनैतिक > आर्थिक > धार्मिक > सैद्धान्तिक > सामाजिक 97.12 > 94.25 > 92.25 > 86.62 > 71.25 > 67.25
वरिष्ठ अध्यापक	आर्थिक > सौन्दर्यात्मक > राजनैतिक > धार्मिक >सामाजिक> सैद्धान्तिक 101.07 > 98.5 > 88.5 > 84.22 > 81.64 > 78.78

उक्त सारणी संख्या–03 में प्रदर्शित आंकडों से विदित होता है कि अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ अध्यापकों में निहित विभिन्न मूल्यों की सापेक्ष स्थिति क्रम में अशासकीय सहायता प्राप्त कनिष्ठ अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक मूल्य को अन्य मूल्य की तुलना में सबसे अधिक वरीयता प्रदान की गई, जबकि सामाजिक मूल्य को सबसे कम तथा वरिष्ठ अध्यापकों ने आर्थिक मूल्य को अन्य मूल्य की तुलना में सबसे अधिक वरीयता प्रदान की है तथा सैद्धान्तिक मूल्य को सबसे कम। कार्यरत दोंनों प्रकार के कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों में धार्मिक मूल्य की स्थिति चतुर्थ स्थान पर एक समान है जबकि अन्य सभी मूल्यों की स्थिति में किंचित् अन्तर पाया गया।

ऐसा होने का कारण यह हो सकता है कि कनिष्ठ कार्यरत अध्यापकों में ललित कला के प्रति प्रेम, संगीत, नृत्य, स्थापत्य सजावट के प्रति प्रेम संभवतरू अच्छे अवसर प्राप्त होते होंगें जबकि दूसरी और सामाजिक मूल्य के सन्दर्भ में दूसरें की सहायता करना, सहानुभूति रखना, दया प्रेम, परोपकार, सौहार्द आदि सामाजिक मूल्यों सें विशेष सरोकार नहीं रह पाते होंगें। वरिष्ठ अध्यापक आर्थिक मूल्य के सन्दर्भ में द्रव्य और धातु के प्रति आकर्षण, धनिकों व उद्योंगपतियो में अधिक की अभिरूचि रखना, लालसा पर्याप्त धन, वैभव व सुख साधनों कें होते हुए भी और अधिक की लालसा रखने आदि की प्रवृति जो मानव के अनेकानेक जन्मजात स्वाभाविक गुणों में से एक है। वरिष्ठ कार्यरत अध्यापक जैसे–2 अधिक अनुभवी होते जाते उनमें सैद्धान्तिक के स्थान पर वह व्यवहारिकता में उनकी रूचि बढने लगती है।

इस प्रकार शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना संख्या–02''अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है,''क्रमशः सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में अस्वीकृत होती है जबकि सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के सम्बन्ध में यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत हो रही है। सम्भवतः यह इसलिये पाया गया है कि जैसे–2 अध्यापक वरिष्ठ होते जाते है उनमें सिद्धान्तवादी होने की प्रवृति बढ़ती जाती है और वे आर्थिक व सामाजिक सन्दर्भों में अपने से कनिष्ठ अध्यापकों की अपेक्षा अधिक सक्रिय हो जाते हैं।

दण्डारेख संख्या –02
अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का दण्डरेखीय चित्रण

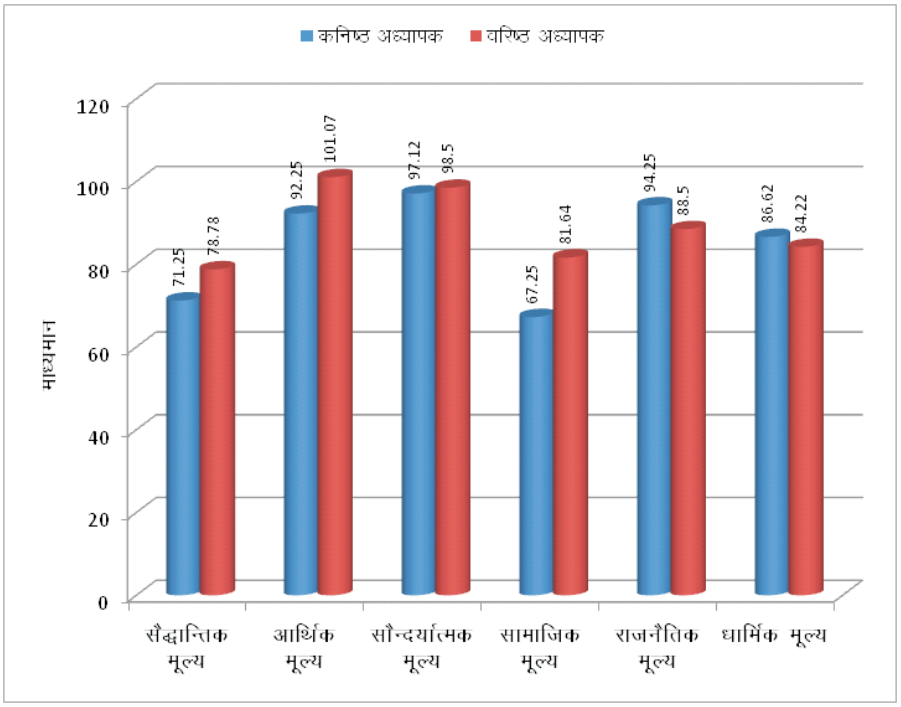

परिकल्पना संख्या –03

''अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

सारणी संख्या–04
अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकोंके विभिन्न मूल्यों का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक विवरण
(मध्यमान, मानक विचलन एवं t– मान के पदों में)

क्रं0 सं0	विभिन्न मूल्य	ग्रामीण अध्यापक (N=92)		शहरी अध्यापक (N=72)		M_1~M_2	t -मान	सार्थकता स्तर
		M_1	SD_1	M_2	SD_2			
1	सैद्धान्तिक मूल्य	74.81	13.87	72.21	13.53	2.6	1.20	**N.S**
2	आर्थिक मूल्य	103.56	16.36	91.9	17.98	11.66	4.33	**0.01**
3	सौन्दर्यात्मक मूल्य	101.31	12.08	97.00	15.89	4.31	1.97	**0.05**
4	सामाजिक मूल्य	64.37	14.21	67.66	14.44	3.29	1.46	**N.S**
5	राजनैतिक मूल्य	98.93	13.93	92.65	18.49	6.28	2.48	**0.05**
6	धार्मिक मूल्य	82.84	16.42	91.23	6.55	8.39	3.23	**0.01**

df=162 t–मान = 0.05 सार्थकता स्तर पर = 1.96
0.01 सार्थकता स्तर पर = 2.58

शोधकर्ता द्वारा सारणी संख्या–04 में प्रस्तुत आंकड़ों से विदित होता है कि –अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में व्याप्त पारस्परिक अन्तर का आंकलन करने हेतु t.मान की गणना की गयी जिसमें 0.01 सार्थकता स्तर पर t.मान आर्थिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्य पर 4.33 व 323 प्राप्त हुआ जो कि काफी अधिक है अर्थात् 0.01

सार्थकता स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 2.58 से काफी अधिक है अर्थात् 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है, परन्तु 0.05 सार्थकता स्तर पर ज. मान सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्य पर 1.97 व 2.48 प्राप्त हुआ जो कि t.मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 1.96 से अधिक है अर्थात् 0.05 स्तर पर सार्थक है जबकि सैद्धान्तिक मूल्य एवं सामाजिक मूल्य पर t.मान 1.20 तथा 1.46 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 1.96 की तुलना में बहुत कम है अर्थात् 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः शोधार्थी द्वारा अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत अध्यापकों में 99 प्रतिशत विश्वास स्तर पर यह कह जा सकता है कि आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य में एवं 95 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सौन्दर्यात्मक मूल्य, राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर विद्यमान है। जबकि सैद्धान्तिक मूल्य एवं सामाजिक मूल्यों में 95 प्रतिशत विश्वास स्तर तक भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पुनश्चः शोधार्थी द्वारा उपरोक्त सारणी संख्या–04 में प्रस्तुत आंकडो द्वारा मध्यमान के आधार पर अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी अध्यापको में निहित विभिन्न मूल्यों की सापेक्ष स्थिति भी बताई जा रही है जो निम्नाकिंत सारणी संख्या–05 में सन्दर्भित आंकडो से भी स्पष्ट होता है–

सारणी संख्या–05
अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरीक्षेत्र के अध्यापकों में निहित विभिन्न मूल्यों की सापेक्ष स्थिति क्रम

अशासकीय सहायताप्राप्त अध्यापक	विभिन्न मूल्यों की स्थिति (मध्यमान के आधार पर)
ग्रामीण अध्यापक	आर्थिक > सौन्दर्यात्मक > राजनैतिक > धार्मिक > सैद्धान्तिक > सामाजिक 103.56 > 101.31 > 98.93 > 82.84> 74.81 > 64.37
शहरी अध्यापक	सौन्दर्यात्मक > राजनैतिक > धार्मिक >आर्थिक > सैद्धान्तिक > सामाजिक 97.00 > 92.65 > 91.23 > 91.9 > 72.21 > 67.66

सारणी संख्या–05 से तत्सम्बन्धी कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर विभिन्न मूल्यों की सापेक्ष स्थिति क्रम में प्रस्तुत आंकडों का अवलोकन करने पर एक रूचि पूर्ण तथ्य विदित हुआ है कि कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों में मात्र सैद्धान्तिक, सामाजिक की स्थिति पंचम एवं षष्टम् स्थान पर एक जैसी है जबकि अन्य सभी मूल्यों की स्थिति में किंचित् परिवर्तन हो रहा है। अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण अध्यापकों ने अवरोही क्रम में प्रथम स्थान पर वरीयता आर्थिक मूल्य को दी है जबकि तत्सम्बन्धी शहरी कार्यरत अध्यापकों ने अवरोही क्रम में प्रथम स्थान पर सौन्दर्यात्मक मूल्य को वरीयता प्रदान की है, लेकिन दोंनों प्रकार के अध्यापक सबसे कम पंचम, षष्टम् स्थान पर सैद्धान्तिक, एवं सामाजिक को वरीयता देते है। सैद्धान्तिक तथा सामाजिक, मूल्यों पर दोनों ही प्रकार के अध्यापकोंकी स्थिति प्रायः एक जैसे पायी गयी।

ऐसा होने का प्रमुख कारण यह है कि–आज समाज में जिसकी लाठी उसी की भैस की कहावत पूर्णतः चरितार्थ है। मात्र पैसा कमाना, शक्ति, सामर्थ्य, व सुख की कामना करना, थोड़े परिश्रम से ही बहुत अधिक की प्राप्ति की चाह रखना, दूसरों के सुख में अपना सुख चाहना, दूसरों की सहायता करना, दया, परोपकार, संवेदनशीलता, सहानुभूति रखना आदि सैद्धान्तिक और सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में अशासकीय सहायता प्राप्त अध्यापक कोई सरोकार नहीं रखते है।

अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना संख्या–03 ''अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है,''मात्र आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, राजनैतिक मूल्य और धार्मिक मूल्य के सन्दर्भ में अस्वीकृत होती है जबकि सांख्यिकीय कसौटी पर सैद्धान्तिक और सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में स्वीकृत होती है।अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में आर्थिक, धार्मिक, सौन्दर्यात्मक तथा राजनैतिक मूल्यों में अन्तर पाया गया लेकिन सैद्धान्तिक और सामाजिक मूल्य के सन्दर्भ में अन्तर नगण्य पाया गया।

दण्डारेख संख्या–03
अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर दण्डरेखीय चित्रण

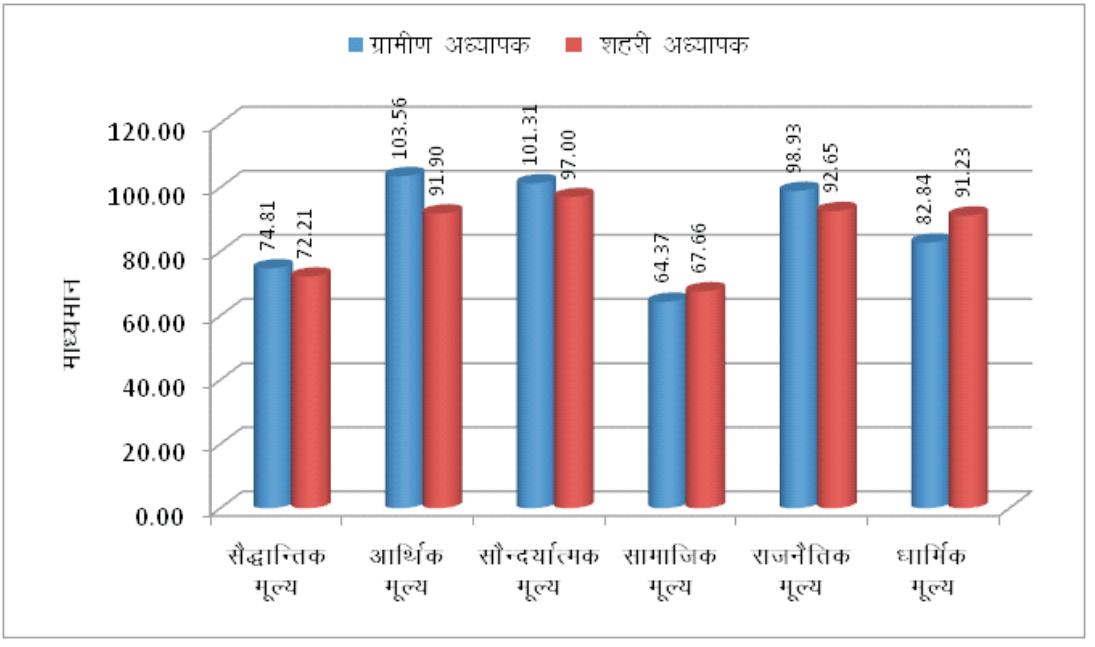

शैक्षिक निहितार्थ .

कोई भी शोध कार्य व्यर्थ सिद्ध होता है कि यदि वह उस क्षेत्र विशेष में कोई योगदान न दे सकें जिस क्षेत्र में वह किया जा रहा है। इस बात को ध्यान में रखते हुये शोध कार्य के निष्कर्षो के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ स्पष्ट किया जा रहा है। शिक्षा आयोग (1964) ने भी यह स्वीकार किया है कि ''भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है उसी प्रकार अध्यापक भी राष्ट्र निर्माता, बालक के भविष्य का निर्माणकर्ता तथा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक बनाया गया हैं।'' हमारी शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक –शिक्षण प्रकिया की एक धुरी है। जिसके अभाव में शिक्षण कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता है शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक आधार स्तम्भ अध्यापक है। अतः शिक्षा व्यवस्था योग्य और कुशल अध्यापक के अभाव में व्यर्थ सिद्ध होती है। अच्छे से अच्छे कुशाग्र बुद्धि वाला बालक योग्य अध्यापक के मार्गदर्शन के अभाव में अपनी प्रतिभा का विकास नहीं कर सकता अतः अध्यापक ही बालक के जीवन का निर्माता है वहीं उसके मस्तिष्क का प्रशिक्षण कर उसे योग्य बना सकता है। विभिन्न मूल्यों से युक्त अध्यापक ही भावी नागरिकों में अपेक्षित मूल्यों का विकास कर सकेगें और व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के विकास द्वारा देश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगें और अपने देश एवं स्वयं के लिए उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने में समर्थ हो सकेगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.अग्रवाल, एम०. (1990) : ''जॉब सैटिसफैक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू सम डैमाग्रेफिक वेरियल एण्ड वेल्यूज, इन एनोटेटेड बिबलियोग्राफी ऑन वेल्यू एजूकेशन इन इंडिया,'' नई दिल्ली, एन०सी०ई०आर०टी०, 2002, पृ०–501.
2.आहूजा, राम. (2012) : ''सामाजिक अनुसन्धान,'' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, नई दिल्ली, पृ0 27.
3.गुप्त, एन0. (2000) : ''मूल्य परक शिक्षा और समाज,'' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली ।
4.भ्रामरी, एवं भागवती, ए. (1988) : ''प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के मूल्यों पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन,'' पीएच. डी, एजूकेशन, विलासपुर, मध्य प्रदेश, 1988।
5.पटेल, निमिषा तथा सिंह, गजव (2012) : ''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि, मूल्य एवं समायोजन का अध्ययन,'' पीएच.डी (शिक्षा) सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय, कानपुर ।
6.प्रभावती, के. (1987) : ''माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शैक्षिक मूल्यों तथा व्यक्तिगत मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन'', पी–एच.डी, शिक्षा शास्त्र, गोरखपुर , 1987।
7.सोनी, आर0. (2013) : ''स्नातक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन,'' शिक्षा मित्रशोध पत्रिका, दिसम्बर, 2013, 6 (2) पृ0 5–6.
8.शर्मा, आर. एवं अग्रवाल, एम. (2013) : ''मानवीय मूल्य एवं अध्यापक शिक्षा,'' इंडियन जनरल ऑफ साइकोमैट्री, वाल्यूम–44 (2), इंडियन साइकोमैट्रीक एण्ड एजूकेशनल रिसर्च एसोसियेशन, 2013 पृ0 159–163.
9.Singh, H.L. (1974) : Measurement of teacher values and their relationship with teacher attiudes and

job satisfaction in buch. M.S. ¼ed½ second surver of research in education, baroda : society for educational research and development, 1979
10.Verma, R.P. (1972) : A study of relationship bet ween the patterns of interpersonal relations and the value of teacher and student in secondary school. In buch M.S. (ed). Second survery of research in education, baroda, society for education research and development 1979.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org